रिपोर्ट

लोकविद्या जन आन्दोलन तैयारी बैठक

20–21 नवम्बर, 2010

विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी

संदर्भ :

जब से दुनिया ने औद्योगिक युग से निकलकर सूचना (ज्ञान) युग में प्रवेश किया है तब से वैश्वीकरण, कम्प्यूटर–इंटरनेट और आधुनिक शिक्षा के संस्थानों ने लोकविद्या और संगठित विद्या के अंतर्विरोधों को खुलकर सामने ला दिया है। खुले आम दो दुनियाँ बसाई जा रही हैं। एक तरफ किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, मज़दूरों, महिलाओं और छोटे–छोटे दुकानदारों (लोकविद्याधर समाजों) का शोषण, विस्थापन और दमन बढ़ता चला जा रहा है और दूसरी तरफ राष्ट्रीय संसाधनों की मनमानी लूट करके जमीनों की लूट, मॉल, हाईटेक सिटी, लम्बी–चौड़ी सड़के, मेट्रो व ऐय्याशी की तमाम व्यवस्थाओं को बनाते चले जा रहे हैं। तेज़ी से गैर–बराबरी को बढ़ाने वाली और सृष्टि का विनाश करने वाली ये व्यवस्थायें आधुनिक ज्ञान पर मौलिक संदेह को तर्कसंगत और जायज़ बनाती हैं।

अभी तक बुनियादी बदलाव के जन–आन्दोलनों ने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सवाल उठाये हैं, इन पर संघर्ष किया है व पुनर्रचना के प्रयास भी किये हैं। लेकिन अब देखा यह जा रहा है कि जब से सूचना युग में ज्ञान आधारित पूँजीवाद ने आकार लिया है तब से इन मुद्दों पर के हर जन–आन्दोलन को वह भोथरा बनाने में सफल हो जाता है। ऐसे में इन्टरनेट और संस्थागत ज्ञान की दुनिया को चुनौती देना सामाजिक बदलाव की एक बुनियादी शर्त के रूप में सामने आती है। ज्ञान के क्षेत्र में अब लोकविद्या के नेतृत्व के बगैर बराबरी, न्याय और भाईचारे का समाज बनाना संभव नही है। ज्ञान के पूँजीवाद से जन्मी गैर–बराबरी से मार्चा ले पाने के लिये यह ज़रूरी है कि लोकविद्याधर समाजों यानि किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, महिलाओं, मज़दूरों और छोटे–छोटे दुकानदारों के संघर्षों के साथ लोकविद्या के ज्ञान–आन्दोलन आकार लें। ये ही लोकविद्या जन–आन्दोलन कहलायेंगे। लोकविद्या जन–आन्दोलन में ही बदलाव के सूत्र निहित हैं।

इसी सोच के साथ 20–21 नवम्बर 2010 को वाराणसी में विद्या आश्रम, सारनाथ पर लोकविद्या जन–आन्दोलन की पहली तैयारी बैठक हुई।

पृष्ठभूमि :

विद्या आश्रम अब तक एक ज्ञान संवाद प्रक्रिया चलाता रहा है, लोकविद्या दृष्टिकोण से पुस्तिकाओं का प्रकाशन करता रहा है और किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, महिलाओं और पटरी के व्यवसाइयों के संगठन और संघर्षों में भागीदार रहा है। मार्च 2010 से लोकविद्या पंचायत (मासिक) के प्रकाशन के साथ वाराणसी, चन्दौली, सिंगरौली, इन्दौर, नागपुर, हैदराबाद और चेन्नई में वहाँ के विद्या आश्रम के सहयोगियों की पहल पर हुई बैठकों में स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ भूमि अधिग्रहण, बिजली, असिंचित भूमि के किसान, कृषि उत्पादन के मूल्य, लोकविद्या आधारित जीवन के मौलिक संवैधानिक अधिकार, शिक्षा, मीडिया, ज्ञान प्रबन्धन और इंटरनेट ज्ञान वार्ता जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चायें हुईं। इन बैठकों ने लोकविद्या जन आन्दोलन के निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित किया और पहली तैयारी बैठक विद्या आश्रम, सारनाथ में करने का निर्णय हुआ।

कार्यवाही :

लोकविद्या जन आन्दोलन की इस पहली तैयारी बैठक में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, और कर्नाटक के साथियों ने भाग लिया। इस बैठक में भारतीय किसान यूनियन (वाराणसी, चन्दौली), अखिल भारतीय किसान महासभा (चन्दौली), शेतकरी संघटना (नागपुर–वर्धा विजय जावंधिया समूह), लोकहित सृजन समिति (सिंगरौली, म.प्र.), विज्ञान कलानिधि संस्था (इन्दौर), लोकविद्या साधिकार संघटना (चिराला, आन्ध्र प्रदेश), बुनकर वेलफेयर संघर्ष समिति (वाराणसी), नारी हस्तकला उद्योग समिति (वाराणसी), डिबेट सोसायटी (वाराणसी) और विद्या आश्रम के प्रतिनिधि एवं सामाजिक कार्यकर्ता व किसान, कारीगर, आदिवासी, छात्र एवं छोटे दुकानदारों की भागीदारी हुई। कुल 60 व्यक्तियों की भागीदारी रही।

दो दिनों की बैठक में कुल चार सत्रों में वार्ता चली। पहले सत्र में वाराणसी, सिंगरौली, इंदौर, नागपुर और आन्ध्र प्रदेश के साथियों ने अपने–अपने क्षेत्रों में लोकविद्या विचार से हुए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की और लोकविद्या विचार को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक बनाने की संभावनाओं को उजागर किया। इस सत्र की अध्य क्षता भारतीय किसान यूनियन के वाराणसी मण्डल के अध्यक्ष जगदीश सिंह यादव और हैदराबाद विश्वविद्य ालय के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर डा. नरेश शर्मा ने की। दूसरे सत्र में लोकविद्या जन आन्दोलन के लिये महत्वपूर्ण बन सकने वाले कुछ मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई जिनमें भूमि अधिग्रहण, लोकविद्या जीवनयापन अधिकार कानून, राष्ट्रीय संसाधनों (विशेष संदर्भ बिजली) का बराबर का बँटवारा व शिक्षा के मुद्दे मुख्य थे। इस सत्र की संयुक्त अध्यक्षता शेतकरी संघटना, महाराष्ट्र, के पूर्व अध्यक्ष विजय जावंधिया और बंगलुरू के ज्ञान प्रबन्धन विशेषज्ञ डा. जे.के. सुरेश ने की। पहले दिन के दोनों सत्रों ने लोकविद्या जन आन्दोलन के स्वरूप को समझने का आधार तैयार किया।

दूसरे दिन के पहले सत्र से लोकविद्या जन आन्दोलन की तैयारी की प्रक्रियाओं पर चर्चा शुरू हुई। लोकविद्या पंचायत (मासिक) के प्रकाशन को नियमित करने व बढ़ाने पर चिंतन हुआ। हिन्दी के अलावा मराठी, तेलगु और मालवी/निमाडी भाषाओं में इसके मुख्य लेखों के अनुवाद और स्थानीय समाजों की हलचल को स्थान देते हुए संस्करण निकाले जाने की आवश्यकता भी सामने आई। यह भी सामने आया कि इसे अधिक लोगों तक भेजने के लिये इंटरनेट का उपयोग भी किया जाये। ज्ञान पंचायतों का प्रभावी व व्यापक इस्तेमाल व लोकविद्या सम्मेलनों के आयोजन पर जोर दिया गया। इस सत्र की संयुक्त अध्यक्षता सिंगरौली से लोकहित सृजन समिति के अध्यक्ष अवधेश द्विवेदी और इंदौर से पॉलिटेक्निक कालेज के प्राध्यापक संजीव कीर्तने ने की। चौथे और अंतिम सत्र की संयुक्त अध्यक्षता इंदौर के गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता एडवोकेट अनिल त्रिवेदी और हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय के फिज़िक्स के प्रोफेसर डा. बी. कृष्णराजुलु ने की।

अन्तिम सत्र में लोकविद्या जन आन्दोलन के निर्माण के प्रस्ताव पर विस्तार से बहस हुई और इसे सर्वसम्मति से पारित किया गया तथा आन्दोलन की पुख़्ता तैयारी के लिये महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

सभी सत्रों में भागीदार व्यक्तियों ने चर्चाओं में हिस्सा लिया। (देखें परिशिष्ट, पृष्ठ 5)

प्रस्ताव

➢ वैश्वीकरण और कम्प्यूटर–इन्टरनेट ने लोकविद्या और संगठित विद्या के बीच के अन्तर्विरोध को खुल कर सामने ला दिया है। ज्ञान के क्षेत्र की ये दो दुनियाँ जैसे कि हाड़–मांस की खुले आम बनाई जा रही दो दुनियाँ का कारक भी हों और नतीजा भी। चाहे अध्ययनों के हवाले से देखें या फिर अपने खुद के अनुभवों से जानें, पूरे विश्व में और भारत में भी अमीरों और गरीबों के बीच की खाई निरंतर

बढ़ती ही चली जा रही है। किसानों, आदिवासियों, मज़दूरों, कारीगरों, छोटे–छोटे दुकानदारों और उनके परिवारों (लोकविद्याधर समाजों) का शोषण, उत्पीड़न, विस्थापन और दमन बढ़ता ही चला जा रहा है। खुले आम दो दुनियाँ बसाई जा रही हैं। एक तरफ उन्माद है, राजधानियों में केन्द्रित राजनीति का उन्माद, धार्मिक प्रतिष्ठानों का उन्माद, बड़ी पूँजी व विश्व बाजार का उन्माद और उच्च शिक्षा संस्थानों का उन्माद, और दूसरी तरफ बेहाल जनता को संगठित करने वाले नई परिस्थितियों से मुकाबला करने के रास्ते खोज रहे हैं।

- यह समझना जरूरी है कि ये रास्ते ज्ञान की दुनिया से होकर गुजरते हैं। जब तक किसान और आदिवासी, कारीगर और महिलायें, पटरी के व्यवसाई और मजदूर अपने ज्ञान का, लोकविद्या का दावा नही पेश करते, जब तक यह दावा नही पेश किया जाता कि पूँजी और शैक्षणिक व्यावसायिकता के प्रभुत्व को बुनियादी चुनौती लोकविद्या ही दे सकती है और यह कि सामाजिक और आर्थिक बराबरी तथा भाईचारे का समाज लोकविद्या के आधार पर ही बनाया जा सकता है, तब तक हम बुनियादी बदलाव के अपने–अपने कटघरों और कल्पनालोकों में कैद रहेंगे। लोकविद्याधर समाज का ज्ञान का दावा ही नई आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सोच को जन्म दे सकता है। **लोकविद्या जन आन्दोलन** इसी दावे को मूर्तरूप देता है।

- लोकविद्या लोगों के बीच बसती है और ज्ञान का मूल रूप है। सभी ज्ञान लोकविद्या से शुरू होता है और लोकविद्या में ही वापस आता है। जो ज्ञान लोकविद्या में वापस नही आता वह मनुष्य और प्रकृति का नाश करता है तथा ज्ञान कहलाने लायक नही होता। लोकविद्या जन आन्दोलन लोकविद्याधर समाज का वह ज्ञान आन्दोलन है जो लोकविद्या दृष्टिकोण के मुताबिक लोकहित में समाज के बुनियादी पुनर्संगठन के रास्ते खोलता है। हर क्षेत्र के लोकविद्या विचार से प्रेरित कार्यकर्ताओं को लोकविद्याधर समाज के ज्ञान आन्दोलन का निर्माण करना होगा। यही **लोकविद्या जन आन्दोलन** होगा।

निर्णय :

20–21 नवम्बर 2010 को विद्या आश्रम, सारनाथ की बैठक में सर्वानुमति से लिये गये फैसले–

1. नवम्बर 2011 में लोकविद्या जन आन्दोलन का पहला स्थापना सम्मेलन किया जाये।
2. इस सम्मेलन की तैयारी में विचार का एक विस्तृत आलेख तैयार किया जाये। इसके लिये एक प्रस्ताव समिति बनाई जाये।
3. विभिन्न क्षेत्रों एवं लोकविद्याधर समाजों में कार्य करने वालों को लोकविद्या दृष्टिकोण से जोड़ने के प्रयास किये जायें। इसके लिये एक संगठन समिति बनाई जाये।
4. उपरोक्त के अनुसार स्थापना सम्मेलन के लिये निम्नलिखित प्रस्ताव समिति व संगठन समिति बनाई जाती हैं –

   प्रस्ताव समिति : चित्रा सहस्रबुद्धे (वाराणसी), एहसान अली (वाराणसी), बी. कृष्णराजुलु (हैदराबाद), विजय जावंधिया (वर्धा), अनिल त्रिवेदी (इंदौर), अवधेश द्विवेदी (सिंगरौली)

   संगठन समिति : दिलीप कुमार (वाराणसी), मो. अहमद (वाराणसी), मोहनराव (चिराला), संजीव कीर्तने (इंदौर), गिरीश सहस्रबुद्धे (नागपुर), विनोद (सिंगरौली)

दोनों ही समितियों का संयोजन विद्या आश्रम को दिया गया। समितियों के विस्तार का हक सम्बन्धित समितियों को दिया गया। प्रस्ताव समिति अगस्त 2011 तक लोकविद्या जन आन्दोलन के वैचारिक आलेख का प्रारूप बना ले जिसे आन्दोलन की अगस्त तैयारी बैठक में अंतिम रूप दिया जाये।

5. लोकविद्या पंचायत (मासिक) के प्रकाशन के लिये एक संचालन समिति बनाई गई।
लोकविद्या पंचायत (मासिक) संचालन समिति : चित्रा सहस्रबुद्धे (वाराणसी), प्रेमलता सिंह (वाराणसी), संजीव कीर्तने (इंन्दौर), रामसुभग शुक्ला (सिंगरौली), मोहनराव (आन्ध्र प्रदेश)

6. लोकविद्या जन आन्दोलन की तैयारी में समितियों के लिये तथा लोकविद्या दृष्टिकोण से कार्य कर रहे कार्यकर्ताओं, सभी के दिशाबोध के लिये निम्नलिखित पर सहमति बनी।

(i) **आन्दोलन के मुद्दे :** निम्नलिखित प्रत्येक पर पुस्तिका तैयार की जायेगी।

- लोकविद्या जीवनयापन अधिकार कानून बनाया जाये। —कृष्णराजुलु
- सभी किस्म के ज्ञान बराबर माने जायें। —गिरीश सहस्रबुद्धे
- खाद्य, वस्त्र व जूता—चप्पल के क्षेत्र किसान, बुनकर तथा सम्बन्धित कारीगरों व महिलाओं के लिये आरक्षित हों तथा इसमें स्थानीय बाजार व खुदरा व्यापार को वरीयता दी जाये। —प्रेमलता सिंह
- बिजली का बराबर का बँटवारा हो। —दिलीप कुमार व श्याम किशोर जायसवाल
- भूमि अधिग्रहण का विरोध हो। सम्बन्धित कानून रद्द हो।
- भवन निर्माण 'मज़दूर' को कारीगर का दर्जा मिले।
- आदिवासी विद्या परिषद का गठन किया जाये।

(ii) **प्रक्रियायें :**

- लोकविद्या पंचायत मासिक
- ज्ञान पंचायत
- लोकविद्या पंचायत सम्मेलन
- लोकविद्या विचार से प्रेरित स्थानीय एवं क्षेत्रीय संगठन, अभियान आदि

(स्थानीय एवं क्षेत्रीय विविधता बनाये रखी जाये। सामुदायिक विविधता बनाये रखी जाये।)

(iii) **कार्य—लक्ष्य :** नवम्बर 2010—नवम्बर 2011 के लिये

- लोकविद्या जन आन्दोलन के निर्माण का विचार सार्वजनिक जीवन में लाना।
- लोकविद्या जन आन्दोलन के लिये आवश्यक साहित्य और उपरोक्त मुद्दों पर पुस्तिकाओं का प्रकाशन करना।
- नवम्बर 2011 के सम्मेलन की एक तैयारी बैठक अगस्त 2011 में करना।
- अगस्त 2011 की तैयारी बैठक तक वैचारिक प्रस्ताव तैयार करना।
- लोकविद्याधर समाज में कार्यरत अधिकाधिक संगठनों, समूहों और व्यक्तियों से सम्पर्क एवं वार्ता करना।

परिशिष्ट

लोकविद्या जन अन्दोलन तैयारी बैठक

20–21 नवम्बर 2010

विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी

सम्पन्न कार्यक्रम

क्रम	दिन	समय	अध्यक्ष	विषय	वक्ता
1	20.11. 2010	सुबह 10.00		परिचय	
2	20.11. 2010	सुबह 10.30	जगदीश सिंह यादव, वाराणसी और नरेश शर्मा, हैदराबाद	विभिन्न क्षेत्रों में लोकविद्या विचार से हो रहे कार्यों की रिपोर्ट –वाराणसी –इन्दौर –नागपुर –सिंगरौली –हैदराबाद	–लक्ष्मण प्रसाद –संजीव कीर्तने –विजय जावंधिया –अवधेश द्विवेदी –मोहनराव
3	20.11. 2010	दोपहर 2.00	जे. के. सुरेश, बंगलुरू और विजय जावंधिया, नागपुर	–भूमि अधिग्रहण –लोकविद्या जीवनयापन कानून –राष्ट्रीय संसाधनों का बराबर का बँटवारा (विशेष संदर्भ बिजली) –शिक्षा	–कृष्णराजुलु, लक्ष्मण प्रसाद, विनोद, रामसुभग शुक्ला, श्रवण कुमार कुशवाहा, सुनील, रामअधार गिरि, –अनिल त्रिवेदी, प्रेमलता सिंह, मोहनराव, कृष्ण कुमार, कृष्णराजुलु, –दिलीप कुमार, रवि शेखर, संतोष कुमार संविज्ञ, अवधेश –कृष्णराजुलु, एकता, राम दुलार मौर्य
4	21.11. 2010	सुबह 10.00	अवधेश द्विवेदी, सिंगरौली और संजीव कीर्तने, इन्दौर	–लोकविद्या पंचायत मासिक –लोकविद्या जन आन्दोलन	–चित्रा सहस्रबुद्धे, संजीव, मोहनराव, अवधेश –चित्रा, अनिल, विजय जावंधिया, नरेश शर्मा, संजीव, सुनील, रामजनम
5	21.11. 2010	दोपहर 2.00	कृष्णराजुलु, हैदराबाद और अनिल त्रिवेदी,	लोकविद्या जन आन्दोलन स्थापना सम्मेलन व	कृष्णराजुलु, अनिल त्रिवेदी, दिलीप कुमार, प्रेमलता सिंह, रवि शेखर, गुंजन, चित्रा, राम दुलार मौर्य

			इन्दौर	तैयारी प्रस्ताव	

- 19.11.10 को दोपहर 4.00 से 7.00 इन्दौर में लोकविद्या विचार से काम करनेवालों के साथ वार्ता